हिन्दी - विभाग डॉ० कविता कुमारी सिं
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

B.A. Part II, Paper III

विषय - रहस्यवाद -

रहस्यवाद रहस्यभावना की पृष्ठभूमि पर ही आधारित है। यह समस्त विश्व किसी अज्ञात सत्ता या शक्ति के द्वारा संचालि होता है। प्रकृति के रहस्य को अभी अनेक वैज्ञानिक खोजों के उपरान्त भी मानव उद्घाटित नहीं कर सका है। अतः मानव मन में उस परम सत्ता के प्रति जिज्ञासा अथवा कौतूहल का पाया जाना सहज है। आचार्य रामचन शुक्ल ने रहस्यवाद की परिभाषा देते हुए क है कि "जो साधना के क्षेत्र में अद्वैतवाद वही भावना के क्षेत्र में रहस्यवाद है।"

भारतीय रहस्यवाद का प्राचीन रूप नाथपंथी योगियों के ग्रन्थों में पाया जात कबीर के काव्य में रहस्यवादी भावना प्र

Appointments

चमक - दमक के साथ उभर कर आती है।
" पंखुड़ी केरी सकरा, देखा ही मुस्काई।"
या " पुहुप बास ते पातरा "
कहकर कबीर उस अज्ञात शक्ति - सत्ता की ओर संकेत करते हैं जो अलख, अगोचर और अगम्य है। इस प्रकार रहस्यवाद में ब्रह्म के लिए आत्मा के प्रेम की प्रधानता का गुण पाया गया है। प्रेम संबंधी इस व्यंजना को कबीरदास ने अपने काव्य में तीन रूप दिए — 1. रहस्यात्मक खोज, (2) रहस्यात्मक विवाद और (3) रहस्यात्मक स्पर्श। कबीर में भारतीय रहस्यवाद का रूप साकार हुआ है, किन्तु जायसी के काव्य में फारसी के सूफीवाद रहस्य के दर्शन हुए।

इस प्रकार हिन्दी - साहित्य के भक्तिकालीन साहित्य में रहस्यवाद के रूप का एक स्पष्ट चित्र बन जाता है जिसमें

जीवात्मा की अंतर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन, (2) अलौकिक शक्ति से निश्छल संबंध जोड़ना, (3) आत्म-निवेदन की प्रधानता, (4) विरह का आवेग और (5) अद्वैत भाव का प्रकाशन आदि विशेषताएँ पायी जाती हैं।

श्री विश्वनाथ सिंह के अनुसार ब्रह्म का स्वरूप रहस्यवाद का आधार है, वह दार्शनिक उड़ान की चरम सीमा है।

कबीर के रहस्यवाद में साधना की गहराई एवं जीवात्मा तथा परमात्मा के सम्मिलन का मधुर रहस्य है।

महाकवि जायसी के रहस्यवाद में लौकि[illegible] को ही प्रधानता दी गई है। वह इस्लामी एके[illegible] वाद के निकट है। जायसी प्रकृति को अपने रहस्यवाद में स्थान देते हैं और उन्हें अपने प्रियतम-प्राप्ति की तस्वीर प्रत्येक कण में दि[illegible] देती है। जायसी ने प्रियतम-प्राप्ति के मार्[illegible] पड़ने वाले साधना-सोपानों का भी वर्[illegible]

इस प्रकार काव्य में रहस्यवाद का संबंध ज्ञान से न होकर हृदय से स्थापित हुआ। अध्यात्म भावना द्वारा मानव को उसकी अखण्ड सत्ता - संबंध से परिचित कराया गया। परोक्ष सत्ता से साक्षात्कार की तीन अवस्थाएँ स्पष्ट दिखलायी दीं।

1. पूर्व तद्रूप (2) तद्रूप (3) प्राग तद्रूप।

तन्मयता के प्रारम्भिक प्रयासों को पूर्व तद्रूप कहा गया। तन्मयता की दशा तद्रूप कहलायी तथा तन्मयता के परे की स्थिति को प्रागतद्रूप कहा गया।

भक्तिकाल से अग्रसर होकर रहस्यवादी भावनाएँ साहित्य में प्रच्छन्न संबंध बनाए रहीं और आधुनिक काव्य - साहित्य में भावना का दर्शन पंत, प्रसाद, निराला, वर्मा के काव्य में हुए।